JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कुमाऊं की पारंपरिक ऐपण कला और रिंगाल शिल्पः स्वरोजगार एंव सतत विकास के संर्दभ में

[1] सुमन थापा, [2] ड़ॉ. मनीषा कड़ाकोटी,
[1] शोध छात्रा, [2] असिस्टेंट प्रोफेसर,
[1] डिपार्टमेंट ऑफ होम सांइस, राजकीय महाविघालय काण्डा, सोबन सिंह जीना विश्वविधालय अल्मोड़ा (उत्तराखंड़),
[2] डिपार्टमेंट ऑफ होम सांइस, राजकीय महाविघालय काण्डा, सोबन सिंह जीना विश्वविधालय अल्मोड़ा (उत्तराखंड़),
भारत

शोध सारांश : भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस), बौद्धिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक पारंपरिक ज्ञान का एक ऐसा भंडार है, जो कला के विभिन्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली संगीत, नृत्य, कला, हस्तशिल्प और सामाजिक संगठन में अपना गहरा प्रभाव डालती हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली उत्तराखंड़ की पारंपरिक विशेषकर कला और शिल्प को प्रतिबिबिंत करती है। उत्तराखंड़ राज्य में कुमाऊं क्षेत्र जो भारत के पूर्वी भाग मे स्थित है, जो राज्य की समूह सास्कृतिक विरासत, सास्कृति प्रथाओं और प्रकृति से सम्पन्न है। कुमाऊनी सास्कृति की झलक इसकी कला और शिल्प मे नजर आती हैं। कुमाऊं की पारंपरिक ऐपण कला और रिंगाल शिल्प, उत्तराखंड़ की समग्र सास्कृति और पारंपरिक कौशल को प्रासंगिक बनाता हैं। वर्तमान में बदलते सामाजिक परिवेश के बाद भी पारंपरिक कलाओं और शिल्प के प्रति युवाओं में रूझान और उत्साह देखने को मिल रहा है। ऐपण और रिंगाल कला ग्रामीण महिलाओं और युवाओं के लिए आय का साधन और उघमिता के नए रास्ते उपलब्ध कर सकता है- जैसे विविध विपणन चैनल और ऑनलाइन प्लैटफार्म आदि के माध्यम से। इस शोध का उद्देश्य कुमाऊं क्षेत्र की पारंपरिक ऐपण कला और रिंगाल शिल्प के माध्यम से उत्तराखंड़ के ग्रामीण समुदाय और महिलाओं के संर्दभ मे स्वरोजगार एंव सतत विकास का विशलेषण करना। इस शोध पत्र के माध्यम से हम यह जानने का प्रयास करेगें कि ऐपण और रिंगाल शिल्प किस प्रकार से ग्रामीण समुदाय और महिलाओं के लिए स्वरोजगार और उघमिता के अवसर प्रदान कर सकते हैं। राज्य की अर्थव्यवस्था व स्थानीय उघमिता के लिए अजीविका कोसशक्त बनाने में सहायता कर सकते है, जिससे राज्य की सास्कृति को देश भर में पहचान मिलें व उत्तराखंड़ सतत विकास की ओर बढ़े।

मूल शब्द - ऐपण और रिंगाल, भारतीय ज्ञान प्रणाली, स्वरोजगाार, उघमिता, सतत विकास।

I. प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस), प्राचीन ज्ञान और पारंपरिक सांस्कृतिक के विस्तृत ज्ञान से सम्पन्न है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होती है। ज्ञान प्रणाली वेदों, उपनिषद, पुराणों, अन्य प्राचीन ग्रंथों से उत्पन्न हुई है (Mandavkar D. P., 2023)। 2020 मे आईकेएस को राष्ट्र शिक्षा निति के द्वारा मान्यता प्राप्त हुई है जो एक मौलिक सिद्धांतो के रुपों मे कार्य करती है (MURTY, 2024) । वैदिक समय के बाद उपनिषद सामने आये जो आध्यात्मिक ग्रंथ, दार्शनिक ग्रंथ और वेदो के गहरे अर्थ और उनके महत्व को स्पष्ट रुप से समझाया करते है। यह ज्ञान प्रणाली बुद्धिमत्ता का एक खजाना है, जो

भारतीय ज्ञान प्रणाली भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव छोड़ती है, उनके विश्वासों, मूल्यों और सांस्कृति को आकार देती है और उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती है। ज्ञान के सभी चर्चाओं में तीन शर्ते निकटता से जुड़ी हैं, दर्शन, ज्ञान और विघा। दर्शन वह दष्टिकोण है जो ज्ञान का तक पहुंचने में सहायता प्रदान करता है और ज्ञान तक पहुंचने का मार्ग प्रदान करता है। जब किसी विशेष क्षेत्र के बारे में एकत्रित ज्ञान को बदलने और शक्षिक उद्देश्यों के लिए व्यवस्थित किया जाता है, तो इसे विघा कहा जाता है (kappor, 2010) । उत्तराखंड, ऊँचे हिमालय की गोद में बसा हुआ, राज्य बर्फ से ढके चोटियों, धीरे बहने वाले ग्लेशियरों, घुमावदार नदियों, कुहासे से भरे घाटियों और विदेशी प्रकार के फ्लोरा और फौना के लिए प्रसिद्ध है। इस दोषरहित प्राकृतिक सौंदर्य से प्रेरित होकर, उत्तराखंड के लोग सदियों से विभिन्न प्रकार की कलाओं और शिल्पों का निर्माण और पोषण करते आए हैं। शिल्प आमतौर पर उपयोगी वस्तुएँ जैसे दरवाजे, खिड़कियाँ, कालीन, मंज़िल के फर्श के कालीन, टोकरी, तांबे के बर्तन या उत्तराखंडी लोक कला ऐपन, अपने डिज़ाइनों में प्रकृति का अनोखा स्पर्श रखते हैं (Monika Negi*1, Anita Rani2, Anupriya Singh3, 2015) । पारंपरिक रूप से आध्यात्मिक और धार्मिक ज्ञान का केंद्र माना जाने वाला उत्तराखंड देव भूमि के रूप में जाना जाता है। उत्तराखंड का धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व व्यापक रूप से मनाया जाता है। पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की विशिष्ट पारंपराए, रीतिरिवाज और जीवन शैली उत्तराखंड की समृद्ध और विविध पहाड़ी संस्कृति में परिलक्षित होती हैं (Rawat, 2024) । उत्तराखंड़ के ग्रामीण समुदाय जिन्हें अपनी विशेष सांस्कृतिक हस्तकला और शिल्प का ज्ञान है जो कही न कही इस ज्ञान प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। विभिन्न संगठनों का ध्यान आकर्षित करने के बाद भारतीय लोक कला प्रकाश मे आया है। कला और शिल्प क्षेत्र मे महिलाओं की अहम भूमिका रही है, जिस कारण आज भी हमारे उत्तराखंड़ की पारंपरिक धरोहर व सांस्कृति पुर्नजीवित हो रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से उपजीविका कृषि पर निर्भर करती है, जो बदले में प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है। विशेष रूप से, बाँस के कारीगर प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अपने घर के उपयोग के लिए बाँस का उयोग करने की परंपरा है (ShikhaUniyalGairola1 · VBhuvaneswari2 · AjayKumarKhanduri3, 2025)। यह शोध अध्ययन यह रेखांकित करता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली नवाचार और उत्तराखंड़ की सांस्कृतिक पहचान को कैसे बढ़ावा दे सकता है जो स्थानीय लोगो को आकर्षित करता है कि वह अपने पारंपरिक कला और शिल्प को नये आधुनिक समय मे देशभर में पहचान दे सके। उत्तराखंड़ राज्य के पारंपरिक ऐपण कला और रिंगाल शिल्प जो कुमाऊं क्षेत्र की विरासत और प्रकृति की देन है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कुमाऊं की पारंपरिक ऐपण कला और रिंगाल शिल्पः स्वरोजगार एंव सतत विकास के संर्दभ में जाँच करना।

1.2 ऐपण कला

ऐपण कला का इतिहास कई सदियों पुराना है और इसकी जड़ें उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र से जुड़ी हैं। ऐसा माना जाता है कि उत्तराखंड ऐपण कला सजावटी फर्श और दीवारों पर जटिल एंव सममितीय डिज़ाइन बनाने की प्राचीन प्रथाओं से विकसित हुई है (Aipan Art of Uttarakhand, n.d.)। जो सौंदर्य की दृष्टि तक ही सीमित नही रहते, बल्कि सांस्कृतिक रूप से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। ऐपण कला भारत के उत्तरी भाग उत्तराखंड़ के कुमाऊं क्षेत्र की एक पारंपरिक लोक कला है जो अत्यंत पूजनीय लोक कला है। ऐपण कला को आमतौर पर शुभ कार्यो में जैसे त्यौहार, नामकरण, विवाह, जनेऊ आदि और भूमि, चौंकी, फूल देई, दहलीज व मंदिरों को सजाने के लिए किया जाता है। आज के आधुनिक समय में इनको ग्रीटिंग कार्ड, वॉल हैंगिंग, कुशन कवर, मेज़पोश, यहाँ तक कि टी-शर्ट जैसी कई चीज़ों पर किया जाता है। सजावटी पैटर्न का इस्तेमाल दरवाज़ों को सजाने के लिए किया जाता है, जिन्हें अब गिफ्ट टैग,बुकमार्क, मिट्टी की चीज़ें, लकड़ी के बक्से, ट्रे और कोस्टर के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है (Aipan or Alpana, 2025)। दीवाली के दींऐ, करवाचौथ, राखी, हाउस नेम प्लेट और फोटो फ्रेम आदि को सजाने के उपयोग में भी किया जाने लगा है। ऐपण कला को बनाने के लिए कच्ची सामग्री जैसे चावल

का घोल, गेरू लाल मिट्टी, हल्दी और रोली का प्रयोग किया जाता है। ऐपण डिजाइन पूर्णता उत्तराखंड़ की प्रकृति के तत्वों, धार्मिक प्रतीकों या देवताओं से प्रेरित होती है। ऐपण कला की आकृतियों का अपना एक अनूठा प्रतिक है, जो सबसे आम प्रतीकों मे से शामिल हैं, जैसे स्वास्तिक, लक्ष्मी पैर, पीपल का पत्ता, श्री यंत्र, गणेश जी, सूरज और चाँद आदि (Tiwari, 2018)। इसकी लोकप्रियता आज भी देखने को मिल रही है और यह कला सफलतापूर्वक पुर्नजीर्वित हो रही है। समय के बदलने के साथ-साथ ऐपण का प्रारूप भी बदला है। गेरू के स्थान पर अब लाल रंग के पेंट तथा चावल के मिश्रण के स्थान पर सफ़ेद रंग के पेंट ने जगह बना ली है। उँगलियों की जगह ब्रश की सहायता से ऐपण बनाये जाने लगे हैं। वर्तमान में कई युवा कलाकारों ने लुप्त होती हुई इस कला को विशेष नए अंदाज में बनाने का प्रयत्न प्रारंभ किया है, जिसके माध्यम से केवल घरों तक सीमित इस कला एवं कलाकारों की प्रतिभा को बाहरी संसार से जुड़ने का सुनहरा अवसर मिल रहा है (Pangti, 2025)।

चित्र :1

चित्र :2

चित्र :3

चित्र :4

1.3 रिंगाल शिल्प

उत्तराखंड़ रिंगाल और रिंगाल से बने उत्पाद पूरे भारत में प्रचालित है। रिंगाल बांस की एक लम्बी घास है। यह दुनिया भर में उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाई जाते है, जो बारहमासी उत्पन्न होने वाली है। बांस के तने, जिन्हें कल्म्स कहा जाता है, बेलनाकार, काष्ठीय और संधियुक्त होते हैं (Vats A. , 2025)। रिंगाल एक अत्यंत अनुकूलनशील संसाधन है जिसका उपयोग विभिन्न प्रकार के उत्पादों को तैयार करने के लिए किया जाता है। उत्तराखंड में रिंगाल की कई प्रजातीय पाई जाती है, जो मुख्य रूप से गोले रिंगाल, थाम रिंगाल, देव रिंगाल और जमूरा रिंगाल है। इन सभी प्रजातियों को 'हिमालयाई पर्वतीय बांस' के रूप में जाना जाता है (Sharma, 2024)। यह तेजी से बढ़ने वाला पौधा है और रोजगार सृजन के माध्यम से पारिस्थितिक संतुलन और स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो आर्थिक और सतत पर्यावरणीय दृष्टिकोण से बाँस को एक अत्युत्तम संसाधन बनाता है। इस शिल्प को और अधिक ऊंचाइयों

तक पहुंचाने के लिए नाबार्ड ने इसकी जीआई यात्रा का समर्थन किया और इसे 2021 में यह सम्मान प्रदान किया गया (NABARD, 2025)। इन वन संसाधनों में, रिंगाल (बौना बांस) इन परिवारों के आजीविका के लिए सबसे लाभकारी है। इन परिवारों ने प्राचीन और पारंपरिक रिंगल बुनाई का ज्ञान समय अनंत से संरक्षित किया है। इस प्रकार रिंगल इनके आर्थिक और सामाजिक- आर्थिक स्थिति को मजबूत करने और बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है (D, 2014)। इतने समृद्ध संसाधन आधार और बाँस के उपयोग की व्यापक जीवित परंपराओं के बावजूद, बाँस की असाधारण संभावनाएँ निष्क्रिय और बड़े पैमाने पर अप्रयुक्त हैं, जैसा कि चीन, जापान और ताइवान जैसे देशों की तुलना में किया जा सकता है जिनका नाम विश्व में बाँस के पर्याय के रूप में जुड़ा हुआ है (Sastry, 2001)। कला व्यवसाय को संचालित करने में कच्चे माल की समस्या का सामना करना पड़ता है, क्योंकि उन्हें निम्न किस्म का कच्चा माल मिलता है। अतः उनको विपणन की समस्या से जुझना पड़ता है। इन कारीगरों एवं शिल्पकारों को अपने माल की बिक्री से उचित मूल्य नहीं मिलता है (Bharti, 2014) रिंगाल उत्पादों को तैयार करने की प्रकिया पूरी तरह से हस्तनिर्मित है। इसके लिए अत्यधिक समय, श्रम, कौशल और धैर्य की आवश्यकता होती (kalash, 2025)।

रिंगाल उत्पाद की विधि :-

1. रिंगाल बांस की कटाई - रिंगाल बांस को सावधनीपूर्वक जंगलो से काटा जाता हैं ।
2. मसाला और उपचार- कीड़ो सं संक्रमण को रोकने के लिए बांस को साफ करने के बाद सुखाया जाता है ताकि उसका स्थायित्व बढ़ सके ।
3. विभाजन और बुनाई- रिंगाल बांस को पतली पट्टियों में विभाजित कर दिया जाता है। जिससे विभिन्न प्रकार की आकृतियों और डिजाइन को बनाने में आसानी मिली है।
4. फिनिशिंग और पॉलिशिंग - आखिरी उतपाद का चयन किया जाता है, और पॉलिश किया जाता है ।

चित्रः 1

चित्रः 2

चित्र : 3 (Vats, 2025)
उत्तराखंड का रिंगाल शिल्प बांस की टोकरी

1.4 स्वरोजगार और सतत विकास

उत्तराखंड़ राज्य सरकार ने इस उद्योग को मजबूत करने और रोजगार की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए कई उपाय और नीतियां अपनाई हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था एमएसएमई पर ध्यान केंद्रित करती है ताकि स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करके उत्पादन, श्रम- सघन प्रक्रियाओं और पुनर्वास के माध्यम से स्थिरता प्राप्त की जा सके (Rawat M. A., 2021)। सतत विकास एजेंडा 2030, जिसमे सदस्यों देशों की गरीबी, अस्वास्थ्य और अस्थिरता से मुक्त करने की एक सामूहिक प्रयास का प्रतिनिधित्व करता है। एजेंडा 2030 का उपयुक्त समय है जब उत्तराखंड़ के पांरपरिक ऐपण और रिंगाल को पुनजीर्वित किया जा सकता है। यह कला कुमाऊं के अधिकांश लोगो को अपनाने में सरलता होती है जिससे उनकी आय और रचनात्मक गतिविधि के रूप मे अपनाने आसान होता है।

1.5 अध्ययन का उद्देश्य :

1. कुमाऊं की पारंपरिक ऐपण कला और रिंगाल शिल्पः स्वरोजगार एंव सतत विकास के संर्दभ में जाँच करना।

2. पारंपरिक ऐपण कला व रिंगाल शिल्प के प्रति युवा पीढ़ि में जागरूकता और रूचि की पहचान करना ।

II. साहित्य समीक्षा :

(Meeta Virmani And Nitansha Bansal, 2018) अपने अध्ययन मे यह दर्शाया कि, प्रोजेक्ट ऐपण ने सफलतापूर्वक एक विलुप्त होती कला रूप को पुनर्जीवित किया और महिलाओं में सशक्तिकरण, वित्तिय स्वतंत्रता और आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया।

(PUNDIR, 2022) रिंगाल बांस ग्रामीणों के लिए न केवल उत्पाद स्वरूप है बल्कि उनके लिए आय का सहारा भी है, जो उनके उत्पादों को बाजार पहुँच के माध्यम से उनके आर्थिक और सामाजिक लाभ को बढ़ा देता है। रिंगाल बांस उधोग सतत विकास और ग्रामीण सशक्तिकरण का एक साधन बन सकता है।

(Mandavkar, 2023) यह शोध अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि विश्वविद्यालयों में आईकेएस आधारित कोर्स और क्रेडिट प्रणाली शुरू की जा रही है, जो देश की समृद्ध विरासत और पारंपरिक ज्ञान और कला के प्रसार के लिए सक्रिय रूप से काम करेगा। यह पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करेगा व जागरूकता बढ़ाएगा।

(Katiyar, 2023) इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय मे एपेण कला की महत्वता और प्रसांगिकता बढ़ी है। यह कला धार्मिक या सास्कुति तक सीमित नही है बल्कि महिलाओं को स्वरोजगार और आत्मनिर्भर बनाने में योगदान दिया है ।

(Maheshwari, 2024) यह अध्ययन बताता है कि व्यवसाय पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली को अपनाते है। उद्यमी क्षेत्र भारतीय ज्ञान प्रणाली को अपने कार्य में शामिल करते है, और सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों जैसे धर्म और कर्म के प्रति प्रतिबद्धता दर्शाते हैं।

(Shikha Uniyal Gairola et al., 2025) यह अध्ययन यह दर्शाती है कि क्षेत्रीय पुनरुद्धार पहलें पर्यावरणीय स्थिरता और आर्थिक विकास के लक्ष्यों को जोड़ सकती हैं। जो ग्रामीण व्यवसाय का सर्मथन करता है, और स्थानीय समुदाय के लिए आजीविका का साधन स्थापित करता है।

(S. Srinivasan et al.,, 2025) इस अध्ययन की जाँच दर्शाती है कि उत्तराखंड़ की ग्रामीण महिला उद्यमियों को सशक्त बनाता है जो उनकी वित्तिय स्थिरता को बढ़ा सकता है और उन्हे आथिर्क रूप से मजबूत करता है।

(DR. Geetanjali Bhatt at el., 2025) माइक्रोफाइनेंस महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक अधिकारों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। महिलाओं को लाभार्थी होने पर आय के स्तर में सुधार, शिक्षा तक पहुंच, निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि और सामाजिक नेटवर्क को मजबूत करता हैं।

III. अनुसंधान पद्धति :

यह शोध कुमाऊँ क्षेत्र की पारंपरिक एपेण कला और रिंगाल शिल्प का अध्ययन करने के लिए गुणात्मक विधियों का उपयोग करता है, जिसमें स्वरोजगार और सतत विकास में उनकी भूमिकाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है। आंकड़ा संग्रह प्रक्रिया में पत्रिकाओं, पुस्तकों, वेबसाइटों, नीतियों, गूगल स्कॉलर और सिमेंटिक स्कॉलर जैसे द्वितीयक स्रोतों की समीक्षा शामिल है।

IV. परिणाम :

इस शोध अध्ययन से यह परिणाम मिला कि, कुमाऊं में पारंपरिक ऐपण कला का महत्व आज भी मौजूद है और धीरे-धीरे इसकी लोकप्रियता बढ़ रही है। कुमाऊं की ऐपण कला और रिंगाल शिल्प वर्तमान समय में स्थानीय ग्रामीण समूदाय और विशेषकर महिलाओं की आजीविका का साधन बन रहा हैं। यह ग्रामीणों की आय और रोजगार का एक महत्वपूर्व सत्रोत बन गई है, महिलाओं के लिए स्वरोजगार और उद्यमिता के अवसर प्रदान कर रहा हैं। जिनमें महिलाएँ ऐपण के माध्यम से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो रही हैं। वर्तमान समय में, युवा पीढ़ि ऐपण के प्रति बढ़ती रूचि दिखा रहे है, जिससे इस कला के संरक्षण में मदद मिलती है (Dr. Mamta Joshi Lohumi, Dr. Pooja Joshi, 2024)। दिसंबर 2019 में, मीनाक्षी खाती ने पारंपरिक ऐपण कला को पुनर्जीवित करने और ग्रामीण महिलाओं के लिए स्वरोजगार के अवसर पैदा करने के लिए "मीनाकृति- ऐपण परियोजना" शुरू की। इस पहल ने हजारों ऑर्डर पूरे किए हैं, जिससे संबंधित महिलाएँ ऐपण कलाकृतियाँ बनाकर आय अर्जित कर रही हैं (Katiyar, 2023)। परियोजनाओं, संगोष्ठियों और प्रदर्शनियों सहित सरकारी और संगठनात्मक प्रयासों ने इस कला रूप को सफलतापूर्वक से पुनर्जीवित किया है, इसके संरक्षण में सकारात्मक योगदान दिया और इसे सशक्त बनाया है और आने वाली पीढ़ीयो के लिए संरक्षित करने में अहम भूमिका निभा रहे है। इस लुप्तप्राय कला को सफलतापूर्वक पुनर्जीवित किया है, और महिलाओं को सशक्त बनाया है। यह कला और शिल्प उत्तराखंड़ राज्य की अर्थव्यवस्था मे एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, और राज्य को सतत विकास की ओर बढ़ा रही हैं। ''एसएचजी सेवा महिला ज्योति परियोजना'' स्थानीय कला, शिल्प और कौशल विकास के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने की आवश्यकता से पैदा हुआ। इस परियोजना ने हजारों महिलाओं को सशक्त बनाया है और गांव की अर्थव्यवस्था को और मजबूत किया है (Support to Empower the Rural Women Artisans, 2024)।

उत्तराखंड़ का एक स्वदेशी पारंपरिक हस्तशिल्प जिसे रिंगाल शिल्प के नाम से जाना जाता है। उत्तराखंड़ कुमाऊं क्षेत्र के ग्रामीण समुदाय की आजीविका का साधन है, जो उनके परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति को सुधारने में अहम भूमिका निभाती हैं। लेकिन वर्तमान समय में रिंगाल शिल्प गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। यह रिंगाल शिल्प मुख्यतः आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बुनकरो की आजीविका का साधन है। बुनकर अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए इस शिल्प पर निर्भर रहते है। रिंगाल बांस की अनियंत्रित कटाई और जलवायु बदलाव के कारण पहाडों में रिंगाल पौधों की संख्या घट रही है, इस कारण बुनकरो को कच्चे माल प्राप्त करने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। जहाँ तक हिल बाँस गतिविधि से अर्जित मौसमी आय का सवाल है । लगभग 75 प्रतिशत कारीगरों ने इस कला और शिल्प आधारित कार्य से 2001-2500 रुपये कमाए। यह अर्जित आय उनके जीवनयापन और सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बनाए रखने और सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है (Marketing and livelihood assessment of Hill Bamboo Based Products in Western Himalayan region of India)। बुनकरो को अपनें उत्पाद की मूल्य कीमत नही मिल पाती, जिसके परिणामस्वरूप उनकी आय मामूली होती है, जो आज के समय में अपर्याप्त हैं। बिक्री मुख्यतः बाजारों, प्रदर्शनियों, मेलों या सरकार से जुड़े आयोजनों तक और बुनकरों के पास सीमित बाजार की पहुँच हैं। आधुनिक रोजगार के अवसर बुनकरों को पलायन के लिए मजबूर करता हैं, और न चाहते हुए भी उन्हे अपने राज्य और परिवार से दूर किसी और राज्य में पलायन करना पड़ता हैं। युवा पीढ़ी भी रिंगाल शिल्प के प्रति बहुत कम रूचि दिखा रही है, जिससे यह पारंपरिक रिंगाल शिल्प विलुप्त होने के कगार पर है।

V. सुझाव :

सभी पाठ्यक्रम या विकल्प मे भारतीय ज्ञान प्रणाली उत्तराखंड़ की कला और हस्तशिल्प को पाठ्यक्रम में शामिल कर सकते है, ताकि सभी छात्रों में पारंपरिक कला व सांस्कृतिक को ज्ञान बढ़ावा दें। ऐपण और रिंगाल के उत्पादों तक पहुँच के लिए ई-कॉमर्स और डिजिटल मार्केट प्लैटफार्म उपलब्ध कराना चाहिए, इससे युवा पीढ़ी के लिए इन कला व शिल्प के प्रति रूझान को बढाया जा सकता हैं, और ग्रामीण महिलाओं के लिए उद्यमिता के अवसर प्रदान करेगें। रिंगाल शिल्प द्वारा उत्पादित वस्तुओं की ब्रिकी के लिए एक केन्द्रीय विक्रय संस्था की स्थापना की जानी चाहिए व बुनकरों को उचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। सरकार और एनजीओ को वित्तिय सुविधा देने वाली संस्थाओं और प्रशिक्षण केन्द्र की पहल व प्रचार करना चाहिए। रिंगाल खेती को बढ़ावा देना चाहिए क्योकि रिंगाल भूस्खलन को रोकने और मिट्टी को स्थिर करके कार्बन को अवशोषित करने में योगदान देता है। यह पर्यावरण के लिए अनुकूल होते है। उत्पादों का निर्माण महिलाओं द्वारा ज्यादा किया जाता है, इसकी रिंगाल खेती को बढ़ावा देना रिंगाल शिल्प, महिला सशक्तिकरण और स्वरोजगार व सतत विकास के लिए एक अच्छा कदम होगा। इससे उनका कल्याण, महिलाओं को स्वरोजगार में मदद मिलेगी और महिलाओं मे सतत आय और आत्मनिर्भता बढ़ेगी। उत्तराखंड़ सतत विकास की ओर बढ़ेगा और कुमाऊं की पारंपरिक ऐपण और रिंगाल शिल्प को देश-विदेश पहचान मिलेगी।

संदर्भ सूची :-

- ***Aipan Art of Uttarakhand*. (n.d.). Retrieved from essence of kumaun: https://www.essenceofkumaun.com/experience/art-and-craft-of-uttarakhand/aipan-art-of-uttarakhand**
- **(2025). *Aipan or Alpana.* Mallital, Nainital : Kumaon Mandal Vikas Nigam .**

- **Bharti, D. R. (2014). कला एवं व्यवसाय एक विश्लेषणात्मक अध्ययन(आर्थिक परिप्रेक्ष्य में). *INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH* .**
- **D, A. (2014). DWARF BAMBOO (RINGAL): A TRADITIONAL LIVELIHOOD OPTION FOR SCHEDULED CASTE FAMILIES OF GARHWAL HIMALAYA. *International Journal of Advanced Research in Engineering and Applied Sciences*.**
- **DR. Geetanjali Bhatt at el. (2025). Role of Self-Help Groups (SHGs) in Enhancement of Women Empowerment: An Empirical Study with Special Reference to Kumaun Region of Uttarakhand. *The Indian journal Of Commerce*, 202.**
- **Dr. Mamta Joshi Lohumi, Dr. Pooja Joshi. (2024). Empowering the Women of UttarakhandThrough the Traditional Folk Art of Aipan. *International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)*.**
- **kalash, a. (2025, 03 13). *uttarakhand's Ringal Craft: The Traditional Bamboo Handicraft of the Himalayas*. Retrieved from amrit kalash : https://amritkalash.shop/article/uttarakhands-ringal-craft-the-traditional-bamboo-handicraft-of-the-himalayas/**
- **kappor, k. (2010). *indian knowledge system* . new delhi: D.K Printwoorld (P) LTD.**
- **Katiyar, D. B. (2023). Relevance, Utility and Present Scenario of Precious Aipan Folk Art form of Uttarakhand. *ISSN : 2583-3189 (E), 2583-0775 (P*.**
- **Maheshwari, D. K. (2024). "Integrating Indian Knowledge Systems into Ethical Entrepreneurship: Analyzing Emerging Trends and Their Influence on Modern Business and Commerce" . *RESEARCH EXPRESSION* .**
- **Mandavkar, D. p. (2023). Indian Knowledge System (IKs). *SSRN Electronic Journal*.**
- **Mandavkar, D. P. (2023). Indian Knowledge System (IKS) . *social science research network*.**
- **Meeta Virmani And Nitansha Bansal. (2018). Seeking Sustainable Heights in the Lives of Women Through Aipan: Case Study of Enactus IP College Initiative. *JOURNAL OF INNOVATION FOR INCLUSIVE DEVELOPMENT*.**
- **Monika Negi*1, Anita Rani2, Anupriya Singh3. (2015). NEW HORIZON FOR AIPAN (FOLK ART OF UTTARAKHAND) MOTIFS THROUGH APPLIQUÉ. *International Journal of Research -GRANTHAALAYAH*.**
- **MURTY, G. (2024). Values and Ethics: Revisiting the Indian Knowledge System . *THE CRITICAL ENDEAVOUR*.**
- **NABARD. (2025, 10 14). *fostering rural prosperity*. Retrieved from National Bank for Agriculture and Rural Development. : https://www.nabard.org/GI/uttarakhand-ringal-craft.aspx**

- **Pangti, L. (2025). *Pangti Art*. Retrieved from https://www.pangtiart.com/about.**
- **PUNDIR, S. (2022). Marketing and livelihood assessment of Hill BambooBased Products in Western Himalayan region of India. *thesis*.**
- **Pundir, Smriti; Vasishth, Amol (Dr.); Ahmad, Taufiq(Dr.). (2022). Marketing and livelihood assessment of Hill Bamboo Based Products in Western Himalayan region of India. *krishikosh egranth*.**
- **Rawat, M. A. (2021). Role Of Msmes In Sustainable Development And Women Empowerpoment Through Employment Generation -A Study Of Uttarakhand. *Elementary Education Online*.**
- **Rawat, S. (2024). Resurgence of Pahadi Culture Amongst Youth ofGarhwal Region of Uttarakhand. *International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)*.**
- **S. Srinivasan et al.,. (2025). *Empowering RuralWomen Entrepreneursin Uttrakhand.* Dehradun: IGI Global Scientific Publishing.**
- **Sastry. (2001). Bamboo: Timber for 21st century. *Draft paper for International Network for bamboo and rattans (INBAR).***
- **Sharma, A. (2024). *रिंगाल से उभरी कला: पर्यावरण संरक्षण के साथ रोजगार, पारंपरिक कला और आधुनिक डिजाइन का मेल.* news18 uttarakhand.**
- **Shikha Uniyal Gairola et al. (2025). Exploring bamboo's potential in economic returns and degraded land restoration in Uttarakhand, India. *Discover Forests*.**
- **ShikhaUniyalGairola1 · VBhuvaneswari2 · AjayKumarKhanduri3. (2025). Exploring bamboo's potential in economic returns and degraded land restoration in Uttarakhand, India. *Discover Forests*.**
- **(2024). *Support to Empower the Rural Women Artisans.* The CSR Journal.**
- **Tiwari, H. (2018). *AIPAN-An Art in Hindi | Aipan Art Of Uttarakhand in Hindi | Aipan Kalla.* uttarakhand: Hindi Knowledge Track.**
- **Vats, A. (2025, 5 10). Retrieved from Digital Indian : https://digitalindian.com/india/uttarakhand-ringal-craft/**
- **Vats, A. (2025, 10 7). *Uttarakhand's Ringal Craft Bamboo Basketry*. Retrieved from Digital Indian : https://digitalindian.com/india/uttarakhand-ringal-craft/#tools-and-raw-material**